श्रीनिवास त्रिपाठी

[redacted]

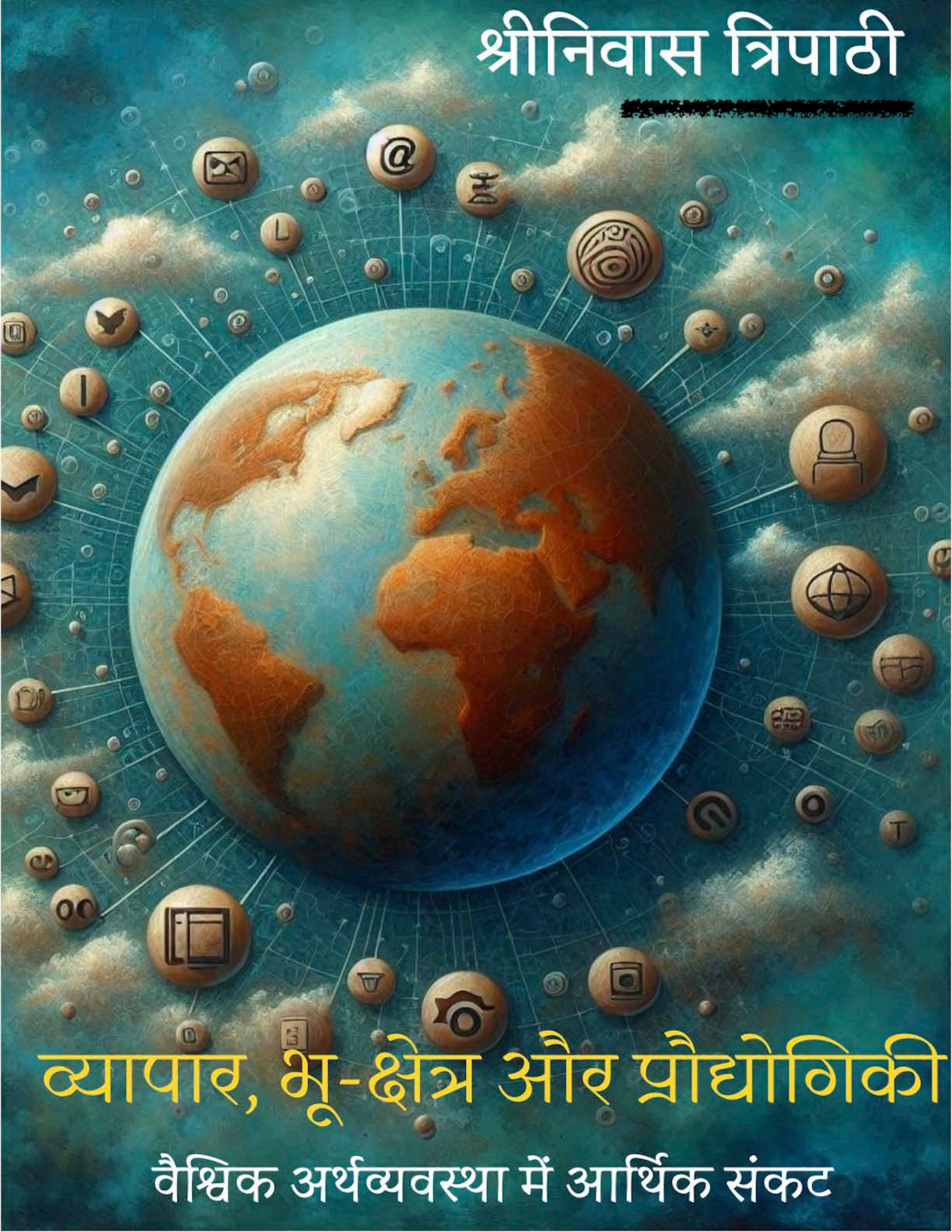

व्यापार, भू-क्षेत्र और प्रौद्योगिकी

वैश्विक अर्थव्यवस्था में आर्थिक संकट

व्यापार, भू–क्षेत्र और प्रौद्योगिकी
वैश्विक अर्थव्यवस्था में आर्थिक संकट

(लेखक की पुस्तक Trade, Territory and Technology: Economic Crisis in the Global Economy का हिन्दी भाषा में स्वतन्त्र अनुकूलन)

श्रीनिवास त्रिपाठी

<u>उद्घोषणा</u>

लेखक ज्ञान एवं विश्वास की सीमा में उद्घोषणा करता है कि–

1– पुस्तक में वर्णित लेखक के विचारों एवं टीका टिप्पणियों की पूरी जिम्मेदारी लेखक की है और पुस्तक के प्रकाशन से सरकार का कोई सम्बन्ध नहीं है।

2– पुस्तक में तथ्य अथवा मत सम्बन्धी कोई ऐसा कथन नहीं है जिसमें राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार अथवा किसी अन्य राज्य सरकार या स्थानीय प्राधिकारी की किसी वर्तमान अथवा हाल की नीति या कार्य की कोई प्रतिकूल आलोचना की गई है।

3– पुस्तक सरकारी कर्मचारी द्वारा अपनी नौकरी के दौरान प्राप्त ज्ञान की सहायता से लिखी गई है किन्तु यह सम्बन्धित विषय पर लेखक के विद्वतापूर्ण अध्ययन को प्रकट करती है तथा रचना का लेखक के सरकारी पद से न तो कोई सम्बन्ध है और न ही होने की सम्भावना है।

4– पुस्तक सम्पूर्ण मानवता, यह मानते हुए कि धरती मॉ पर निवास करने वाले समस्त लोग एक ही परिवार के सदस्य हैं, के कल्याण से सम्बन्धित है।

श्रीनिवास त्रिपाठी

अगस्त 15, 2009

लखनऊ

पुस्तक परिचय

प्रस्तुत पुस्तक उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के विश्व व्यापक तरंग के प्रवाह के प्रभाव में वैश्विक अर्थव्यवस्था में उत्पन्न कार्यात्मक और संरचनात्मक परिवर्तनों पर दृष्टिपात का एक प्रयास है।

अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं, जिन्हें संरक्षक माना जाता था, के ऊपर से विकासशील विश्व के लोगों का भरोसा उठ गया है क्योंकि संकट की घड़ी में वे निर्धन अर्थव्यवस्थाओं की हित रक्षा में असहाय प्रतीत हो रही हैं। अन्तराष्ट्रीय मुद्राकोष एवं विश्व बैंक जैसी संस्थाएं पूर्व शताब्दी की एशियाई संकट के समय खरी नहीं उतरी थीं। आर्थिक संकट 2008 ने जब विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को क्षत–विक्षत किया उस समय भी उनका सहयोग प्रभावी नहीं दिखा।

विकासशील विश्व की गरीबी एवं बेरोजगारी जैसी समस्याओं का समाधान किसी एक देश द्वारा सम्भव नहीं प्रतीत होता है बल्कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्व के समस्त देशों के द्वारा एक ईकाई के रूप में एकीकृत होकर संयुक्त प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। विश्व को खुशहाल और समृद्ध मानव समुदाय का निवास स्थान बनाने के लिए 'एक व्यक्ति एक मत' के आधार पर निर्वाचित 'वैश्विक लोकतान्त्रिक सरकार' के गठन की तत्काल आवश्यकता है।

लेखक परिचय

प्रस्तुत प्रस्तक के लेखक श्रीनिवास त्रिपाठी वर्तमान में खाद्य तथा रसद विभाग उ0 प्र0, द्वितीय तल, जवाहर भवन, लखनऊ में वरिष्ठ वित्त एवं लेखाधिकारी के पद पर कार्यरत हैं।

श्री त्रिपाठी इलाहाबाद विश्व विद्यालय इलाहाबाद से विधि स्नातक एवं भूगोल विषय में परा–स्नातक हैं। उनका चयन उ0 प्र0 प्रान्तीय सिविल सेवा में 1998 में हुआ था और वे उ0 प्र0 वित्त एवं लेखा सेवा संवर्ग के अधिकारी हैं। प्रशिक्षण प्राप्ति के बाद उनकी प्रथम तैनाती आदर्श कोषागार, जवाहर भवन, लखनऊ में कोषाधिकारी के पद पर हुई थी।

श्री त्रिपाठी 2006 में शान्ति निकेतन, पश्चिम बंगाल में होने वाले भारतीय इतिहास कॉग्रेस के अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे तथा उन्होंने उसी वर्ष ओरियण्टल कान्फ्रेंस के जम्मू विश्व विद्यालय, जम्मू कश्मीर में हुए अधिवेशन में भी सहभाग किया था।

प्राक्कथन

अरबों के हाथ से ग्रेनेडा के निकल कर स्पेन के प्रभुत्व में आ जाने के बाद स्पेन 15वीं शताब्दी में यूरोप का सबसे शक्तिशाली राजतन्त्र बन गया। यूरोप का सबसे सशक्त राजतन्त्र समकालीन भारत और चीन के समानान्तर नहीं था। पूरब की समृद्धि ने पश्चिम को आकर्षित किया और उनके लोगों को समुद्रीय या स्थलीय मार्ग से वहॉ पहुॅचने के लिए विवश किया। वायुमार्ग तत्समय अनुपस्थित था। पूरब–पश्चिम या एशिया–यूरोप के मध्य आवागमन के एक मात्र स्थलीय मार्ग, जो इस्तम्बूल से होकर जाता था, को 1453 में ऑटोमन तुर्कों द्वारा बन्द कर दिये जाने के परिणामस्वरूप यूरोप के लोगों का वहॉ से बाहर निकलने का विकल्प समुद्रीय मार्ग ही था।

इटली के प्रसिद्ध नाविक क्रिस्टोफर कोलम्बस ने कुछ निजी यूरोपीय निवेशकों, जिनमें इटली के निवेशक प्रमुख थे, की मदद से अटलाण्टिक महासागर पार करते हुए 1492 में उस भू–भाग पर कदम रखा जो तत्समय यूरोपियों को अज्ञात था एवं बाद में अमेरिका महाद्वीप पहुॅचने का द्वार बना। अमेरिकीय महाद्वीप में पहुॅचने के उपरान्त यूरोपियों ने वहॉ के मूल निवासियों की कीमत पर वहॉ अपनी बस्ती बनाना प्रारम्भ किया। वहॉ बसने के बाद यूरोपियों ने पेरू एवं मेक्सिको की गहरी जड़ों वाली संस्कृतियों को अमेरिकीय भू–भाग से सदा के लिए मिटा दिया। ऑटोमन तुर्कों के हाथ इस्तम्बूल का में आ जाना ही विश्व इतिहास में मध्य युग का अन्त एवं आधुनिक युग का प्रारम्भ माना जाता है।

पुर्तगाली नाविक, वास्को–ड–गामा, अफ्रीका के दक्षिणी छोर, उत्तमाशा अन्तरीप, से होकर भारत के मालाबार तट स्थित कालीकट बन्दरगाह पर 1498 तथा गोवा 1510 में पहुॅचा। लगभग उसी समय, 1526 में, बाबर ने उत्तर–पश्चिमी भारत के खैबर और बोलन दर्रों से होकर गुजरने वाले स्थलीय मार्ग से भारत पर आक्रमण किया था। शेरशाह सूरी ने बाबर के पुत्र हुमायूॅ को चौसा एवं कन्नौज के युद्धों में पराजित करके उसे भारत छोड़कर ईरान भागने के लिए विवश किया परन्तु 1555 में पुनः भारत आकर उसने मुगल राजवंश की स्थापना किया।

स्मरणीय है कि 1570 में डच व्यापारिक जलयानों की वाहक क्षमता इंग्लैण्ड, फ्रांस एवं जर्मनी के संयुक्त क्षमता के लगभग बराबर थी। स्पेन ने 1565 में फिलीपींस पर अधिकार करने के उपरान्त पूरब में सैनिकों एवं ईसाई मिशनरियों को भेजा परन्तु इंग्लैण्ड पर विजय प्राप्ति हेतु उसके द्वारा भेजी गई 'अजेय अर्मदा' बिना विजय प्राप्ति किये हुए 1588 में बर्बाद हो गई।

ब्रिटिश महारानी एलिजाबेथ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को पूरब से व्यापार करने का चार्टर 1600 में दिया तथा डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी का गठन 1602 में हुआ था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के निवेशक 100 प्रतिशत, 150 प्रतिशत एवं यहॉ तक कि कभी–कभी 200 प्रतिशत तक वार्षिक लाभांश अर्जित

करते थे। भारत एवं ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागों से अर्जित लाभ का निवेश सं0 रा0 अमेरिका के रेलवे आदि के विकास में किया गया।

अंग्रेजों ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को 1757 में प्लासी के युद्ध में हरा कर भारतीय रियासतों में राजनैतिक हस्तक्षेप प्रारम्भ किया। इसके उपरान्त एक विशुद्ध व्यापारिक कम्पनी शासी निकाय बन कर भारत पर शासन करने लगी। भारत में कम्पनी–शासन स्थापित होने के बाद भारतीय प्राकृतिक एवं मानव संसाधन तथा सम्पत्ति का नियमित दोहन ब्रिटिश उद्योगों के हित में प्रारम्भ हुआ एवं उसके ही बाद ब्रिटिश उद्योग उत्थान के विभिन्न चरणों से गुजरा।

19वीं शताब्दी के मध्य तक क्रयशक्ति के सन्दर्भ में सं0 रा0 अमेरिका ज़ार शासित रूस तथा क्रान्तिकारी प्रुसिया से आगे निकल गया था एवं फ्रांस और भारत के तुल्य हो गया था। उस समय भारतीय अर्थव्यवस्था केवल ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था से पीछे एवं फ्रांस के लगभग तुल्य थी। 1880 के दशक में अमेरिकीय अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे सशक्त ब्रितानी अर्थव्यवस्था से आगे निकल गई।

20वीं शताब्दी के मध्य तक अफगानिस्तान जैसे उन उपनिवेशों जो औपनिवेशिक शक्तियों के लिए अलाभप्रद हो गये थे को स्वतंत्रता कर दिया गया था। 1940 के दशक तक सं0 रा0 अमेरिका की अर्थव्यवस्था इतनी सशक्त हो चुकी थी कि उसे एशियाई एवं अफ्रीकी बाजार, जो तत्समय यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के अधीन थी, की आवश्यकता का अनुभव होने लगा था।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की महत्वपूर्ण घटनाओं में हैं– उपनिवेशों का विघटन, नव–साम्राज्यवाद, बहुराष्ट्रीय निगम, सं0 रा0 अमेरिका के वर्चस्व वाली अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाएं एवं सार्वजनिक अर्थव्यवस्था आदि। कालक्रम में वैश्विक आर्थिक तन्त्र आर्थिक क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति, अवसाद एवं उभार जैसे विभिन्न चरणों एवं पेट्रोलियम संकट से गुजरता हुआ आर्थिक संकट 2008 तक पहुँचा।

16वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य का समय अमेरिका एवं यूरोप वासियों के वर्चस्व का था जिसके प्रारम्भिक वर्षों में विशेष बल बड़े पैमाने पर दास व्यापार एवं यूरोपियों के लिए सम्पत्ति एवं भूमि प्राप्त करने के लिए सभ्य लोगों एवं राष्ट्रों के दोहन पर था जबकि वर्तमान शताब्दी में विशेष बल मानव गरिमा के संरक्षण तथा लोगों की आवश्यकता के अनुसार सम्पत्ति एवं अवसर के समान वितरण पर है।

विश्व में आज एक समूह ऐसे देशों का है, जहाँ कृषि में यन्त्रीकरण एवं अन्य विशेषताओं के कारण उच्च उत्पादकता तथा उत्पादन है और वह एक व्यवसायिक गतिविधि है जबकि दूसरे समूह के देशों के लिए वही कृषि, जिसकी प्रमुख विशेषता है कम उत्पादन एवं उत्पादकता, पारिवारिक सदस्यों की सहभागिता के साथ जीवन निर्वहन का एक स्रोत मात्र एवं जीवन पद्धति है। आज लगभग

दो अरब लोग भुखमरी के शिकार हैं। पश्चिम ने पूरब के निर्धन राष्ट्रों की समस्याओं को हल करने का प्रयास किया परन्तु तथा–कथित विकास के नाम पर अपने लाभ के अधिकतमीकरण की प्रक्रिया के उप–उत्पाद के रूप में।

खाद्य समस्या के केन्द्र में है– ''जिसकी कमी है वह खाद्य सामग्री नहीं बल्कि वह है राजनैतिक इच्छा शक्ति एवं प्राप्तकर्त्ता की भुगतान की क्षमता की परवाह किये बिना ईमानदारी से भोज्य पदार्थ के वितरण की सामाजिक प्रतिबद्धता।''

उपनिषद् में उल्लिखित है,'' ।'' अर्थात् आर्थिक बाधाओं एवं सामाजिक असमानता के कारण किसी को भी पर्याप्त भोजन के बिना नहीं सोना चाहिए।

राजा रुद्रदामन द्वारा दक्षिण भारत में एवं राजपूत राजाओं द्वारा उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में खुदवाये गये जलाशय आज भी उपरोक्त उपनिषदीय कथन का प्रयोजन सिद्ध कर रहे हैं।

अवध के नवाब आसफ–उद्दौला अकाल में अकुशल कामगारों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए आज भी याद किये जाते हैं। ब्रिटिश शासन काल में अकाल अधिनियम के अन्तर्गत अकाल का परीक्षण करने के लिए उत्तर भारत में निर्माण करायी गयी नहरों से आज भी विस्तृत क्षेत्र में सिंचाई की जा रही है।

प्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी पं0 ब्रज भूषण मिश्र 'ग्रामवासी' ने अपनी दैनिक डायरी, जो 'मेरे जीवन की कहानी' नाम से प्रकाशित है, में 1965 के सूखे में विशेष कर उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के विन्ध्य पर्वतमाला क्षेत्र में राहत प्रदान करने के प्रयास का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

श्री ए0जी0 खेर, पूर्व अध्यक्ष उत्तर प्रदेश विधान सभा, की अध्यक्षता में स्वंसेवी संगठनों के समूह के रूप में उत्तर प्रदेश सूखा राहत समिति का गठन हुआ था। मुझे भी सूखाग्रस्त क्षेत्र में उनके निर्देशन में समिति के सचिव के रुप में सेवा करने का अवसर मिला था। मैं राजनैतिक एवं सामाजिक प्रतिबद्धता के सन्दर्भ में उल्लेख करना चाहूँगा कि पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार, स्वर्गीय श्री मोरारजी देसाई की सरकार की अवधि में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित देश के स्वैच्छिक संगठनों के सम्मेलन में मुझे उत्तर प्रदेश सूखा राहत समिति का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला था।

भोज्य पदार्थ की कमी एवं बढ़ती हुई कीमतों के सन्दर्भ में यह स्पष्ट है कि पेट्रोल की बढ़ती हुई कीमत, जैव–डीजल के लिए मक्का उत्पादन बढ़ाने के लिए फसल प्रतिरूप में परिवर्तन एवं खद्यान्न की कृषि के अन्तर्गत कृषि भूमि के क्षेत्रफल में कमी के कारण खाद्यान्न एवं पशु आधारित उत्पाद के उत्पादन में कमी एवं उनके मूल्य में वृद्धि हुई। यह कमी एवं तत्सम्बन्धी मूल्य वृद्धि सं0 रा0 अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों के लिए नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों के लोगों के लिए अत्यन्त दर्दनाक थी। विश्व में खाद्य–असुरक्षा, जहॉ कहीं भी है, अन्ततः राजनैतिक एवं आर्थिक कारणों से है